प्रातः क्लास 2/9/1966 ओम्

यह कॉलेज है ना। जैसे स्कूल में जब स्टूडेंट बैठे रहते हैं तो समझते हैं हम टीचर के आगे बैठे हैं। कौन–सा इम्तहान पास करने बैठे हैं वो भी एम बुद्धि में रहती है। सतसंग आदि में जहाँ वेद–शास्त्र आदि सुनाते हैं वहाँ कोई एम नहीं रहती। वो शास्त्र आदि तुम्हारी बुद्धि से निकल गए हैं। यह सब हैं भक्तिमार्ग के अनेक शास्त्र। उसमें कुछ भी रखा हुआ नहीं है। यहाँ तो तुम जानते हो हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं भविष्य 21 जन्म लिए। स्टूडेंट घर में बैठे होंगे अथवा कहाँ भी जावेंगे, बुद्धि में यह रहता है हम फलाना इम्तहान पढ़ रहे हैं। तुम बच्चे भी क्लास में बैठे हो। जानते हो हम देवता बन रहे हैं। तुम भी स्टूडेंट हो, सारा दिन बुद्धि में यह खयालात रहता है कि हम भविष्य में देवता बनने पढ़ रहे हैं या भल जाते हैं, अपन को विद्यार्थी तो समझते हो ना। हम रूह हैं, इस शरीर द्वारा पढ़ रहे हैं। रूह जानती है यह शरीर छोड़ भविष्य में नया शरीर लेंगे। उनको देवता कहा जाता। यह तो विकारी, पतित शरीर है। फिर हमको नया शरीर मिलेगा। यह समझ अब मिली है। मैं आत्मा पढ़ रहा हूँ। ज्ञान सागर पढ़ा रहे हैं। यहाँ तुमको कोई भी गृहस्थ व्यवहार का ओना है नहीं। बुद्धि में यही रहता है हम भविष्य लिए मनुष्य से देवता बन रहे हैं। यहाँ नर्क में तो देवताएँ रहते नहीं। देवताएँ रहते ही हैं स्वर्ग में। यहाँ घड़ी–2 चिंतन करने से बच्चों को खुशी रहेगी और पुरुषार्थ भी करेंगे। मंसा–वाचा–कर्मणा पवित्र भी रहेंगे। किसको तंग नहीं करेंगे। सबको खुशी का संदेश सुनाते रहेंगे। ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ तो बहुत हैं ना। सब स्टूडेंट लाइफ में हैं। ऐसे नहीं कि धंधाधोरी में जाने से वो लाइफ भूल जावेगी। जैसे यह मिठाई वाला है, समझेगा ना हम स्टूडेंट है। स्टूडेंट को कब मिठाई बनानी होती है क्या? यहाँ तो तुम्हारी बात ही न्यारी है। शरीर निर्वाह के लिए व्यवहार भी करना है। साथ–2 बुद्धि में यह याद रहे इसमें है मेहनत। हम परमपिता परमात्मा द्वारा पढ़ रहे हैं। यह तुम्हारी बुद्धि में ही रहता है। इस समय सारी दुनिया नर्कवासी है; परन्तु यह भी कोई समझते नहीं कि हम भारतवासी ..... हैं। हम भारतवासी ही स्वर्गवासी थे। भारत ही स्वर्ग था, भारत ही अब नर्क है। यह किसको पता ..... है। तुम भी नहीं जानते थे। तुम बच्चों को सारा दिन यह नशा रहता नहीं है। घड़ी–2 भूल जाते हैं। ..... ब्रह्माकुमारियाँ हो, टीचर्स हो। शिक्षा देती हो, हम कैसे मनुष्य को देवता, स्वर्गवासी बना रहे हैं। ..... बुद्धि में रहनी चाहिए। सारी दुनिया इस समय नर्कवासी, आसुरी सम्प्रदाय है। आत्मा भी पतित है ..... भी पतित है। अब तुम बच्चों को इन विकारों से ग्लानि आती है। काम–क्रोध आदि ग्लानि की .....। सबसे ग्लानि की चीज़ है विकार। सन्यासियों में भी थोड़ा क्रोध रहता है; क्योंकि (जैसा अन्न) ..... गृहस्थियों का ही खाते हैं। कोई अनाज ना खाते, पैसे तो लेते हैं ना। पतितों का उसमें भी असर ..... है। पतित का अन्न, पतित ही बनावेंगे। पवित्रता के ऊपर तुम रिवोल्युशन करते हो। यह बढ़ता .....। सब चाहेंगे हम पवित्र बने। यह तात लग जावेगी। पवित्र बनने बिगर तो स्वर्ग का मालिक बन ... सकेंगे। धीरे–2 सबकी बुद्धि में आता रहेगा। जो स्वर्गवासी बने होंगे वो ही बनेंगे। कहेंगे, हम तो पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक ज़रूर बनेंगे। कोई–2 स्त्रियाँ भी बहुत सूपर्णखा होती है। विकार के लिए बहुत तंग करती है। सूपर्णखा–पूतना यह सब आसुरी नाम दिए हैं। शास्त्रों में भी नूँध है। बरोबर इस समय पूतनाएँ हैं जो पति को विकार के लिए तंग करती है। जरासंधी आदि उनको कहते हैं जो स्त्री को तंग करते ..... आसुरी दुनिया है ना। तो आसुरी मनुष्यों के नाम भी ऐसे हैं बसर मल... कोई–2 के फिर अच्छे–2 ..... होते हैं। दुनिया में नहीं जानते कि हम आसुरी सम्प्रदाय है। तुम बच्चे समझते हो। भल गाते हैं हम ..... है; परन्तु अर्थ नहीं समझते। तो तुम बच्चे जब यहाँ बैठते हो तो बुद्धि में है हम अब स्वर्गवासी ..... रहे हैं। मनुष्य से देवता बन रहे हैं। यह आसुरी दुनिया विनाश हो दैवी दुनिया स्थापन होनी है। इस ..... कहा जाता है संगम। सतयुग–त्रेता का संगमयुग नहीं गाया जाता। यह कल्याणकारी संगमयुग है जबकि ..... दुनिया से पावन होती है। इसलिए इनको पुरुषोत्तम युग कहा जाता है। यह कल्याणकारी है। .....

मनुष्य सृष्टि का कल्याण होता है। बाप कल्याणकारी है तो बच्चों को भी कल्याणकारी बनावेंगे। आकर राजयोग सिखाए मनुष्य से देवता बनाते हैं। तुम जानते हो यह है हमारा हेड स्कूल। यहाँ कोई गौरख धंधा भी किसको नहीं है। बाहर जाने से तो धंधों–धोरी में लग जाते हैं तो यह याद नहीं रहता कि हम स्टूडेंट हैं। हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे हैं। यह खयालात बुद्धि में तब चले जब फुर्सत हो। कोशिश कर टाइम निकालना चाहिए। बुद्धि में याद रहना चाहिए हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन रहे हैं। एक बाप को ही याद करना है। धंधे में भी फ्री टाइम मिलता है। बुद्धि में यह याद कोशिश कर लाना चाहिए। हम गॉड फादरली स्टूडेंट हैं। आजीवका के लिए यह धंधा आदि करते हैं। वो है मायावी धंधा। यह भी तुम्हारी आजीवका है भविष्य के लिए। सच्ची कमाई तो यह है। इसमें बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। अपन को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा बाप को याद करना है। समझना है अब हम आत्माओं को जाना है घर। बाबा हमको लेने आए हैं। सारा दिन बुद्धि में विचार–सागर–मंथन चलना चाहिए। जैसे गाए ओगारती रहती है ना। बच्चों को अविनाशी खज़ाना मिलता है ना। यह है आत्माओं के लिए भोजन। यह याद आना चाहिए हम परमपिता परमात्मा द्वारा पढ़ रहे हैं देवता बनने लिए वा राज पद पाने लिए। यह याद करना है। घड़ी–2 भूल जाते हैं तो फिर खुशी के बदले अवस्था मुरझाई रहती है। यह संजीवनी बूटी है ना। अपन पास भी रखनी है और औरों को भी देनी है सुरजीत करने लिए। शास्त्रों में तो लम्बी–चौड़ी कहानियाँ लिख दी हैं। बाप इन सबका रहस्य बैठ बताते हैं। मनमनाभव अर्थात् बाप को याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। अपनी दिल से पूछते रहो, जाँच करते रहो और एक/दो को सावधान करते रहो। कोई खिटपिट होती है तो फिर बुद्धि उसमें लग जाने कारण किसी का कहना मीठा नहीं लगता। माया तरफ बुद्धि लग जाने से फिर वो ही फिकरात रहेगा। तुम बच्चों को तो खुशी में रहना चाहिए। बाप को याद करो; परन्तु अपनी ही उलझन में होगा तो वो दवाई लगेगी नहीं, घुटके खाते रहेंगे। ऐसा करना नहीं चाहिए। स्टूडेंट पढ़ाई को थोड़े ही भूल जाते हैं। तुम बच्चे जानते हो यह हमारी पढ़ाई है भविष्य के लिए। इसमें ही हमारा कल्याण है। धंधा वा नौकरी आदि करते हुए यह भी कोर्स लेना है। यह सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है यह नॉलेज बुद्धि में रखनी है। याद .... संजीवनी बूटी। एक/दो को याद दिलानी चाहिए। स्त्री–पुरुष है एक/दो को याद कराते रहे। शिवबाबा ..... द्वारा यह पढ़ा रहे हैं। शिवबाबा के रथ का सिंगार कर रही हूँ। शिवबाबा की याद रहनी चाहिए। सा.... दिन याद रहना तो मुश्किल है। वो अवस्था अंत में ही होनी है। जब कर्मातीत अवस्था होनी है। तब ..... रूस्तम से माया भी लड़ती रहेगी। गाया भी हुआ है एक/दो को सावधान कर उन्नति को पाओ। ऑफीस.... नौकर को भी कह देते हैं कि हमको याद बात याद कराना। तुम भी एक/दो को याद कराओ। मंजिल बड़ी ऊँच है। इनको कोई भी मनुष्य मात्र जानते ही नहीं। सब भक्ति के गौरख धंधे में फँसे हुए हैं। भक्ति में बड़ा हंगामा है। यह सब छूट जाना है। यहाँ जो भी मनुष्य कर्म करते हैं वो विकर्म हो जाता है; क्योंकि रावण राज्य है। बच्चों को सीढ़ी पर भी अच्छी रीत समझाया है। चाढ़ी बड़ी लम्बी है। उतरते–2 नीचे आए तमोप्रधान बन पड़े हैं। अब फिर नीचे से एकदम ऊपर चढ़ कर सतोप्रधान बनना है। यह अक्षर एक्युरेट है। बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम पावन बन जावेंगे। यह बाप कोई नई बात नहीं सुनाते हैं। तुमने लाखों–करोड़ों बारी यह ज्ञान सुना है। फिर भी सुनेंगे। ऐसे कोई भी सतसंग में कहने वाला नहीं होगा कि हमने कल्प पहले सुना है, अब सुन रहे हैं, फिर सुनेंगे। कल्प–2 सुनते आए हैं। ऐसे कोई कह नहीं सकेगा। बाप समझाते हैं तुमने आधा कल्प भक्ति की है। अब फिर तुमको ज्ञान मिला है, जिससे सद्गति होती है। कल्प–कल्पांतर तुमको यह ज्ञान मिलता रहा है। और कोई मनुष्य इन बातों को समझ ना सके। ज्ञान सागर एक ..... ही कहा जाता है। अभी तुम बच्चे सन्मुख बैठे हो। जानते हो हम यहाँ आते हैं नर्कवासी से स्वर्गवासी बन.....। बाप को याद करने से पाप कट जावेंगे। यह तो समझने की बात है ना। पुरुषार्थ करना है। जज वा बड़े

कोई कहते हैं परमात्मा का नाम–रूप नहीं है। यह तो हो नहीं सकता। उनको पुकारते हैं, महिमा गाते हैं। ज़रूर कोई चीज है ना। तमोप्रधान बुद्धि होने कारण कुछ भी समझते नहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो हम आत्मा पहले सतोप्रधान थी, फिर तमोप्रधान बनी हैं। पुनर्जन्म लेते–2 नीचे चले आते हैं। बाप समझाते हैं– मीठे–2 बच्चों, इतने 84 लाख योनियाँ तो कोई लेते ही नहीं। है ही 84 जन्म। पुनर्जन्म भी सबका होगा। ऐसे थोड़े ही ब्रह्म में जाकर लीन होंगे वा मोक्ष को पावेंगे। यह तो बना–बनाया ड्रामा है। एक भी कम–जास्ती नहीं हो सकता। यह तो बना–बनाया अनादि–अविनाशी ड्रामा है। इस बड़े नाटक से फिर छोटे–2 नाटक बनते हैं। वह सभी हैं विनाशी। अभी तुम बच्चे बेहद में खड़े हो। तुम बच्चों को नॉलेज भी मिली है हमने कैसे 84 जन्म लिए हैं। अभी बाप ने बताया है। आगे किसको पता नहीं था। ऋषि–मुनि भी कहते थे हम नहीं जानते हैं। बाप आते ही हैं संगमयुग पर, इस पुरानी दुनिया को चेंज करने। ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना फिर से करते हैं। वह तो लाखों वर्ष कह देते। कोई बात याद भी न आ सके। महाप्रलय भी कोई होती ही नहीं। बाप राजयोग सिखलाते हैं फिर राजाई तुम पाते हो। इसमें तो संशय की बात ही नहीं। तुम बच्चे समझते हो पहले नम्बर में सबसे प्यारा है बाप, फिर दूसरा प्यार है श्रीकृष्ण। सन्यासी थोड़े ही यह समझते हैं। वह तो आते ही हैं बाद में। उनको क्या पता। तुमने 84 जन्म लिए हैं। तुम ही जानते हो। श्रीकृष्ण है स्वर्ग का पहला प्रिन्स। नम्बरवन। वही फिर 84 जन्म लेते हैं। इनके ही अंतिम जन्म में मैं प्रवेश करता हूँ। अभी तुमको पतित से पावन बनना है। पतित–पावन बाप ही है। पानी की नदियाँ थोड़े ही पावन कर सकती हैं। यह नदियाँ तो सतयुग में होती हैं। वहाँ तो पानी बहुत (शुद्ध) रहता है। किचड़ा आदि नहीं वहाँ होता। यहाँ तो हरिद्वार में कितना किचड़ा पड़ता है। बाबा का खुद देखा हुआ है। उस समय तो ज्ञान नहीं था ना। अभी वंडर लगता है, पानी कैसे पावन बना सकता। कितनी मनुष्यों की पत्थरबुद्धि है।

तो बाप समझाते हैं– मीठे–2 बच्चे, कब भी मूँझो नहीं, बाप को याद कैसे करें। अरे, तुम बाप को याद नहीं कर सकते हो। वह है कुख की संतान। तुम हो एडॉप्टेड बच्चे। एडॉप्टेड बच्चों को जिस बाप से मिल्कियत मिलती है उनको भूल सकते हैं क्या! बेहद के बाप से बेहद की मिल्कियत मिलती है तो उनको भूलना थोड़े ही चाहिए। लौकिक बच्चे कब बाप को भूलते हैं क्या? परन्तु यहाँ तो माया का आपोजीशन होता है। माया की युद्ध चलती है। यह सारी दुनिया कर्म–क्षेत्र है। बाप कर्म–अकर्म–विकर्म का राज़ भी समझाते हैं। आत्मा इस शरीर में प्रवेश कर यहाँ कर्म करती है। यहाँ रावण राज्य में कर्म विकर्म बन जाते हैं। वहाँ रावण राज्य ही नहीं तो कर्म अकर्म बन जाते हैं। विकर्म कोई होता ही नहीं। यह तो बहुत सहज बात है। यहाँ रावण राज्य में कर्म विकर्म हो जाते हैं इसलिए कर्म का दंड भोगना पड़ता है। ऐसे थोड़े ही कहेंगे रावण अनादि है। नहीं। आधा कल्प है रावण राज्य। आधा कल्प है रामराज्य। तुम जब देवताएँ थे तो तुम्हारे कर्म अकर्म थे। अभी यह है नॉलेज। बच्चे बने तो फिर पढ़ाई पढ़नी है। बस। फिर और कोई धंधे आदि का ख्याल भी न आना चाहिए; परन्तु गृहस्थ–व्यवहार में रहते यह धंधा आदि भी करने वाले हैं। तो बाप कहते हैं कमल फूल समान रहो। ऐसे देवताएँ तुम बनने वाले हो। यह निशानी विष्णु को दे दी है; क्योंकि तुमको शोभेंगे ही नहीं। उनको शोभता है। वही विष्णु के दो रूप ल०ना० बनने वाले हैं। वह है ही अहिंसक परमो देवी–देवता धर्म। न कोई विकार की काम–कटारी होती, न लड़ाई–झगड़ा आदि होता। तुम डबल अहिंसक बनते हो। तुम ही थे। अभी फिर बनते हो। बाप ने 84 का चक्र समझाया है। यह बातें कोई शास्त्रों में भी नहीं है। सिर्फ देवताओं के चित्र रह गए हैं। कोई से पूछो, कहेंगे– यह देवताएँ सतयुग के मालिक थे। और कोई इनसे ऊपर हैं नहीं। नाम ही है गोल्डन एज। कंचन दुनिया। आत्मा और काया दोनों कंचन बन जाती हैं। कंचन काया कौन बनाते हैं? बाप। अभी तो आयरन एज्ड है ना। अभी तुम बच्चे जानते हो सतयुग पास्ट हो गया। कल सतयुग था ना! तुम राज्य करते थे। फिर

झट कहेंगे, हमारा राज्य था। अभी तुम नॉलेजफुल बनते हो। सभी तो एक जैसे नहीं बनेंगे। अगर कोई कहे– बाबा, कृपा करो, रहम करो, तो ट्रान्सफर कैसे होंगे? क्लास में तो नम्बरवार होते हैं। एक जैसे हो न सके। बाप तो गिनती का हिसाब–किताब बताते हैं। हम हर 5000 वर्ष बाद आता हूँ। विचार करो, आगे हम कितने बेसमझ थे। बाप, जिसने विश्व की बादशाही दी, उनको हम भूल गए। किसने भुलाया? इन तुम्हारे गुरुओं ने। बाप कहते हैं हम तो कोई शास्त्र आदि नहीं पढ़ता हूँ। मेरा चित्र दिखाते हैं। ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों–शास्त्रों का सार सुनाता हूँ। एडॉप्शन बच्चों को बाप बैठ नॉलेज पढ़ाते हैं। इसलिए यह नॉलेज तुम सिर्फ ब्राह्मण ही जानते हो। न शूद्र, न देवताओं को ही यह ज्ञान है। ब्राह्मणों को पढ़ाने वाला शिवबाबा और ब्राह्मणों को गुम कर दिया है। बाकी देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र दिखाते हैं। इन सभी बातों को तुम अभी समझते हो। तुमको अंदर में खुशी रहती है। स्टूडेंट जो पढ़ाते हैं उनकी चाल–चलन आदि भभके से होते हैं। वह होता है देह का नशा। तुम्हारा है देही–अभिमानी का नशा। यह है शुद्ध। बाप हमको पढ़ा रहे हैं। बिचारे मनुष्य तो जानते ही नहीं, इसलिए अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते रहते हैं। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। शादी बरबादी, कलियुगी लोकलाज, कुल की मर्यादा...

तो बाप कहते हैं, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों! किसका बच्चा गुम हो जाता है, फिर 6–8 मास बाद आकर मिलता है, बड़ी सिक–प्रेम से मिलते हैं। बाप भी कहते हैं– मेरे बच्चे, कितने वर्षों से भूल गुम हो गए हो। आगे कब मिले थे बाप से? 5000 वर्ष से बाप से गुम अलग हुए हो। अभी फिर तुमको पढ़ा रहा हूँ। भारतवासियों को यह भी पता नहीं कि अभी हम रावण राज्य में हैं। तुम समझते हो, हम बरोबर पराये रावण राज्य में थे। वह राज्य हमने श्रीमत पर स्थापना किया था। अभी फिर कर रहे हैं। जानते हो हमारा राज्य जब होगा तो बाकी यह सब गुम हो जावेंगे। जैसे बड़ का झाड़ होता है ना। उनकी शाखाएँ बड़ी लम्बी होती है। मोटर में जाकर सारा चक्र लगाते हैं। यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ भी कितना बड़ा है। सतयुग में बहुत छोटा, जरूर देवी–देवताओं का ही झाड़ था। अभी तो कितने धर्म आदि हैं। गाते भी हैं फकीराने साहब लगदा प्यारा... तुम अभी फकीर हो ना। सिवाय एक बाप के और कोई प्यारा नहीं लगता। इस पर दृष्टांत भी देते हैं ना। माई ने कहा यह लाठी भी छोड़ो, नहीं तो इसकी भी याद तुमको आवेगी। बाप भी समझाते हैं देह सहित देह के सभी संबंध छोड़ो। सभी चाहते हैं हम घर जावें। यहाँ तो अपार दुख है। विनाश के लिए भी कितनी तैयारियाँ कर रहे हैं। बाप कहते हैं यह विनाश भी कल्प पहले मिसल होना है। कल्प–2 होता आया है। यह तो खुशी की बात है। कृष्ण के चित्र में भी दिखाया हुआ है विनाश के बाद ही विश्व में शांति होगी। अभी तुम श्रीमत पर विश्व में शांति स्थापन कर रहे हो तो तुम शांतिधाम चले जावेंगे, फिर तुम आकर नई दुनिया में राज्य करेंगे। यह बाप से वर्सा मिलता है ना। बाप आकर नॉलेज देते हैं। इसमें आशीर्वाद आदि की बात ही नहीं। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है यह भी अभी तुम जानते हो। भारत स्वर्ग था। और कोई धर्म था ही नहीं। अभी आत्माएँ घोर अंधियारे में हैं। उनको अब सोझरा में बाप ही ले जाते हैं। गायन भी है ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश। कल्प की आयु ही कितने लाखों वर्ष कह देते तो घोर अंधियारा हुआ ना। जागते ही नहीं। बाप कहते हैं यह शास्त्र आदि सभी भक्तिमार्ग के हैं। भक्ति दुर्गति है। बाप ही आकर भक्ति का फल देते। मुक्ति–जीवनमुक्ति में ले जाते हैं। सद्गति कहा जाता है शांतिधाम और सुखधाम को। बच्चों को नशा चढ़ा (रह)ना चाहिए, हम यह शरीर छोड़ जाकर भविष्य में यह बनेंगे। खुशी में अंदर नाचना चाहिए। यह है गुप्त खुशी। बच्चे सभी एक जैसे स्वीट नहीं होते हैं, नम्बरवार होते हैं। इसलिए बाबा भी कहते हैं नम्बरवार स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट गाया जाता है ना। अभी तुम बच्चों को स्वीटेस्ट बनना है। इसको कहा जाता है स्कॉलरशीप। अच्छा, मीठे–2, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप–दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

शिवबाबा याद है?